प्रस्तावना

06 दिसम्बर,1992 । दिन रविवार ।

अयोध्या में विवादित ढांचा टूटने का दिन । मैं उसदिन वहीं था । मैंने उस ढांचे को टूटते देखा । अपनी आँखों से। मैंने यह भी देखा कि किस तरह अगले 36 घंटों तक मंदिर के दीवार की चिनाई होती रही और एक निश्चित ऊँचाई के बाद ही सुरक्षा दलों ने उस परिसर को अपने कब्जे में लिया। मुझे अभीतक यह याद है कि किस तरह तीसरे दिन प्रातः लगभग दो बजे एक युवा आईपीएस अधिकारी दौड़ी आयी और हाँफते- हाँफते मुझे बताया कि सुरक्षा दलों ने परिसर को कब्जे में ले लिया है, प्रशासन को यात्री रेल गाड़ियों की तुरंत आवश्यकता है, जिससे कार सेवकों को अयोध्या से शीघ्रातिशीघ्र बाहर भेजा जा सके ।

मैं उस समय भारतीय रेलवे यातायात सेवा में परिवीक्षाधीन अधिकारी था । 06 दिसम्बर को अयोध्या में कारसेवा प्रस्तावित थी, जिसमें बड़ी संख्या में कारसेवकों के आने की संभावना थी । रेल के वरिष्ठ अधिकारियों ने दस साल की सैनिक सेवा के मेरे अनुभव को ध्यान में रखते हुए आपातकालीन अधिकारी के रूप में मुझे अयोध्या में तैनात कर दिया । मैं दो दिसम्बर को वहाँ पहुँचा और अगले तीन सप्ताह तक वहीं रहा ।

उन दिनों अयोध्या एक छोटा स्टेशन था, जहाँ सुविधाएँ बहुत सीमित थीं, इसलिए मैं अधिकारी सैलून लेकर गया और उसी में पूरे समय तक रहा ।

उस दौरान अयोध्या के प्रशासनिक अधिकारी चाय पीने या कुछ खाने -पीने मेरे सैलून में ही आते, क्योंकि तनाव के चलते शहर की दुकानें अधिकतर बंद ही रहतीं। कई बार तो वे अपनी मीटिंग्स वगैरह भी मेरे सैलून में ही कर लेते । मैं भी वहां मौजूद होता । इस कारण उस समय की सभी राजनीतिक और प्रशासनिक गतिविधियों की पूरी जानकारी मुझे मिलती रही ।

इस तरह अपने अयोध्या प्रवास के दौरान मुझे छ: दिसंबर और उसके आगे-पीछे के समस्त घटनाक्रम को निकट से देखने का मौक़ा मिला, जिसमे छः दिसम्बर को विवादित ढांचे के टूटने की घटना भी शामिल है। वह सारा दृश्य अभीतक मेरी स्मृति में ज्यों का त्यों जीवित है।

मैंने इस घटना का उल्लेख उसका विवरण देने के लिए नहीं, अपितु इसलिए किया है कि आज जब मैं मुड़कर पीछे देखता हूँ, तो मेरा उस समय अयोध्या में होना मेरे जीवन की इस प्रकार की कई घटनाओं की शृंखला में एक कड़ी की तरह लगता है, जो अंततः मुझे इस पुस्तक तक ले आयीं। उस छ: दिसंबर को अयोध्या में मेरी मौजूदगी मेरी अपनी किसी योजना का परिणाम नहीं थी। यही बात इस पुस्तक के बारे भी लागू होती है।

2. पूर्व नियोजित नहीं

इसलिए अगर मैं यह कहूँ कि यह पुस्तक मेरी किसी योजना या सपने का परिणाम है, तो यह सही नहीं होगा, क्योंकि यह सच नहीं है । अगर मैं यह कहूँ कि इसके पीछे किसी की योजना नहीं है, तो यह भी सही नहीं होगा, क्योंकि सच यह भी नहीं है । लेकिन अगर आप जानना चाहें कि इस योजना के पीछे कौन है, तो मैं नहीं बता सकता क्योंकि उसका नाम पता मुझे भी नहीं मालूम । हाँ, मैं इतना अवश्य कर सकता हूँ कि इस प्रश्न से संबंधित सारे तथ्य मैं आपके सामने रख दूँ, निर्णय आप स्वयं करें ।

3. राम से परिचय

राम से मेरा परिचय माता जी ने छह-सात वर्ष की अल्पायु में ही करा दिया था, जब उन्होंने मुझे संक्षिप्त रामचरितमानस पढ़ने को दिया। 30-35 पृष्ठों की पतली सी पुस्तक, जिसमें श्रीराम की कथा चौपाइयों में अर्थ सहित दी गयी थी । जीवन में मेरे द्वारा पढ़ी जाने वाली वह पहली पुस्तक थी।

इसके अतिरिक्त रात्रि को सोते समय वे मुझे मानस की चौपाइयाँ, दोहे, सोरठा आदि छंदों को सुर में गाकर सुनातीं और मुझे भी गाना सिखातीं। वे स्वयं बहुत अच्छा गाती थीं और ढोलक भी बजाती थीं। मेरे नाना जी भी कुशल मृदंग वादक और गायक थे। इस तरह मेरी माता जी को संगीत और साहित्य विरासत में मिले थे।

मेरे दादाजी रात्रि में लालटेन की रोशनी में मुझे नहीं पढ़ने देते थे। वे भी मुझे अपने पास बिठाकर या जाड़े में अपनी रजाई में साथ सुलाकर मानस के लोकप्रिय प्रसंगों को गाकर सुनाते, उनका अर्थ बताते।

स्कूलों में उस समय शनिवार को सांस्कृतिक कक्षाओं में अन्त्याक्षरी होती थी, जिसमें आजकल के फ़िल्मी गानों की बजाय रामचरितमानस की चौपाइयाँ और हिन्दी की साहित्यिक कविताएँ सुनायी जाती थीं। कक्षाओं और स्कूलों के बीच प्रतियोगिता भी होती थी।

अन्त्याक्षरी में मेरा मन बहुत लगता था। मैं इसके लिए रामचरितमानस के अतिरिक्त रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, कामायनी, मधुशाला और हल्दीघाटी के अधिकांश भागों के अतिरिक्त अन्य कई कविताओं को याद कर गया था।

उन दिनों मेरे गाँव में रामलीला होती थी। उसका मेरे ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा । वैसी उच्चकोटि की रामलीला मैंने न रामनगर देखी, न दिल्ली में। रामलीला में रामचरितमानस की चौपाइयों के अतिरिक्त राधेश्याम रामायण के पारसी शैली के और रामलीला दर्पण के सवैया और कवित्त शैली के छंदों से मेरा परिचय हुआ।

इन छंदों के साथ नाटकीयता और संगीत के मिश्रण से रामलीला का आकर्षण और देखने का आनंद कई गुना बढ़ जाता। मुझे ये छंद बहुत अच्छे लगते। मैंने इन्हें याद कर गाना सीख लिया।

इस तरह बचपन में मेरी माताजी, दादाजी, स्कूल और गाँव की रामलीला के माध्यम से राम से मेरी थोड़ी बहुत जान पहचान हो गई।

इसके बाद जीवन की आपाधापी ने मुझे अपनी तरफ़ खींच लिया। गाँव से हाई स्कूल के लिए रामगढ़, उच्च शिक्षा के लिए पटना, पारिवारिक ज़िम्मेदारियों और चालीस सालों की लगातार सेवा के बीच जीवन अपनी गति से चलता रहा ।

लेकिन इन सबके बीच मेरे जीवन में एक क्रम से कुछ ऐसी घटनाएँ घटती रहीं, जिनसे लगता है मानों कोई अदृश्य शक्ति मुझे पंतग की तरह उड़ा रही थी । कभी पास लाती तो कभी ढील दे देती, दूर हवा में उड़ने के लिए, पर डोर कभी नहीं छोड़ी। इन घटनाओं ने ही मेरे जीवन को निश्चित दिशा दी ।

4. घटनाओं की शृंखला

पहली घटना थी, माताजी की प्रेरणा से मुझे पुस्तकें पढ़ने की आदत पड़ना। पुस्तक चाहे किसी भी विषय की हो, मैं चट कर जाता। विशेष रूप से हिंदी की कहानियाँ और उपन्यास । इन्हें पढ़ने के लिए मैं कक्षाएँ छोड़ देता। मेरी माता जी को भी पढ़ने का बहुत शौक़ था। कई बार हम मोटी पुस्तकों को बीच से आधा- आधा काटकर पढ़ते । उम्र के साथ पढ़ने की मेरी भूख बढ़ती गयी ।

धीरे -धीरे जासूसी दुनिया, चंद्रकांता, चंद्रकांता संतति, भूतनाथ, रक्तमण्डल जैसी पुस्तकों से शुरू हुआ मेरा पागलपन की हद तक उपन्यास पढ़ने का सफर कुछ ही सालों में हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकारों, कहानीकारों, कवियों, आलोचकों आदि से होता हुआ विश्व की अन्य भाषाओं के महान लेखकों तक जा पहुँचा।

लगातार पढ़ते रहने से रुचि परिष्कृत होती गयी। बाल्यकाल से ही पुस्तकें पढ़ने की आदत पड़ना मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात हुई। यह आदत आज भी, ज्यों की त्यों बनी हुई है।

दूसरी घटना थी, उच्च शिक्षा के लिए अपने चाचा स्वर्गीय श्री जितेंद्र राठौर के साथ पटना प्रवास। चाचा जी कवि थे । उच्च कोटि की साहित्यिक पुस्तकें ख़रीदने, पढ़ने का उन्हें शौक़ था, जिनमें तुलसी साहित्य भी शामिल था। मैं भी पढ़ता। उनसे मिलने उनके साहित्यकार मित्र आया करते थे। हर तरह के लेखन पर उनकी चर्चाएँ होतीं । मैं भी सुनता । वे मुझे फणीश्वर नाथ रेणु जैसे बड़े लेखकों से मिलाने भी ले जाते। इन कारणों से हिन्दी साहित्य को एक

सजग पाठक की तरह देखने की मेरी दृष्टि विकसित हुई। यहाँ तक मेरी रुझान केवल तुलसीदास तक और वह भी साहित्यिक थी।

तीसरी घटना थी, सैनिक अधिकारी के रूप में मेरी पहली पोस्टिंग प्रयागराज होना। वहाँ मेरा संपर्क हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकारों और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विद्वान प्राध्यापकों से हुआ। जिनमें प्रमुख थे स्वर्गीय मार्कन्डेय जी, डा० दूधनाथ सिंह, डॉ0 सत्यप्रकाश मिश्र, प्रोफेसर मालती तिवारी इत्यादि। इसके अतिरिक्त उन दिनों प्रयागराज आने वाले हर साहित्यकार से भेंट मुलाकात होती, विचारों का आदान- प्रदान होता, बहुत कुछ सीखने को मिलता।

इनके सानिध्य में मुझे हिन्दी भाषा और साहित्य की विभिन्न विधाओं को व्यवस्थित ढंग से पढ़ने और समझने का ज्ञान मिला। इस ज्ञान से मुझे अन्य विषयों जैसे इतिहास आदि को भी समझने में बहुत मदद मिली। कुल मिलाकर दस साल का प्रयागराज का प्रवास मेरे लिए बौद्धिक जागरण का काल साबित हुआ।

मैंने स्कूल, कॉलेज में कभी इतिहास की पढ़ाई नहीं की थी। इतिहास के बारे में मेरा ज्ञान प्राइमरी कक्षा में पढ़ी समाज अध्ययन की पतली पुस्तक तक सीमित था। उस पुस्तक के केवल चोल, चेर और पाण्ड्य शब्द ही मुझे याद थे। मेरी अपनी डिग्री पटना विश्वविद्यालय से इक्नोमिक्स आनर्स की थी ।

प्रयागराज के प्रवास के दौरान ही मैंने सेना की नौकरी छोड़ने का निश्चय कर सिविल सेवा की परीक्षाएँ दी । वैकल्पिक विषयों में मैंने हिंदी और इतिहास चुना। हिंदी का ज्ञान तो थोडा बहुत था, लेकिन इतिहास मेरे लिए एकदम नया विषय था।

सिविल सेवा परीक्षा में वैकल्पिक विषय के रूप में इतिहास लेना मेरे जीवन का चौथा महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इसने मेरे जीवन को एक निश्चित दिशा दे दी।

सेवा में आने के बाद भी मेरा इतिहास का अध्ययन जारी रहा। प्राचीन भारत के इतिहास की कई बातों में मुझे स्पष्टता का अभाव दीखता। विशेष रूप से इसके काल निर्धारण में। मैंने पाया कि सामान्यतः भारत में ऐतिहासिक काल का आरंभ गौतम बुद्ध के काल से माना जाता है, उससे पहले के काल को ऐतिहासिक नहीं माना जाता । इसका अर्थ यह हुआ कि गौतम बुद्ध से पहले का हमारा कोई इतिहास और अस्तित्व नहीं है। इसके लिए दिये जाने वाले कारण मुझे भ्रामक लगते। यह बात मुझे पहेली सी लगती ।

आश्चर्य भी होता, यह सोच कर कि जिस देश में विश्व का सबसे पहला ग्रंथ- ऋग्वेद लिखा गया, अन्य वेद, पुराण, उपनिषद, धर्मशास्त्र और विशाल महाकाव्य लिखे गए, उसने अपना कोई इतिहास नहीं लिखा या इन महान ग्रंथों में कोई इतिहास नहीं है ? सेवा की व्यस्तता में जब भी समय मिलता, मैं इस विषय की पुस्तकें पढता और इस पहेली को सुलझाने की कोशिश करता ।

5. ज़बरदस्त विरोधाभास

इस क्षेत्र में मेरी सबसे बड़ी पहेली श्रीराम थे। मैं जितना ही उनके बारे में पढ़ता, उन्हें जानने की कोशिश करता, मेरी उलझन उतनी ही बढती जाती। भारतीय समाज और इतिहास में मैंने उनके बारे में जबरदस्त विरोधाभास पाया।

एक तरफ तो देश की मुख्य धारा के इतिहासकार और पढे-लिखे प्रबुद्ध भारतीयों का वर्ग है, जो श्रीराम के अस्तित्व को ही नकारता है । इस वर्ग ने श्रीराम को काल्पनिक या मिथिकल करार देकर इतिहास की पुस्तकों से उन्हें बाहर कर रखा है। इस वर्ग में वे पढ़े- लिखे हिन्दू भी शामिल हैं,जो श्रीराम को ईश्वर मान, घर और मंदिर में उनकी पूजा तो करते हैं, पर इतिहास की पुस्तकों में उन्हें स्थान देने को तैयार नहीं ।

दूसरी तरफ़ देश -विदेश में फैला हिंदुओं का एक बहुत बड़ा वर्ग है, जो विष्णु का सातवां अवतार मान उनकी पूजा करता है। श्रीराम को ईश्वर मानने के अतिरिक्त यह वर्ग उनके विषय में कुछ भी सुनने को तैयार नहीं ।

मैंने पाया कि इन दो विपरीत ध्रुवों के बीच वास्तविक श्रीराम कहीं खो गए हैं। दोनों ही पक्ष श्रीराम को इतिहास में स्थान देने को राजी नहीं, अपने- अपने कारणों से।

विचित्र स्थिति है। विपरीत विचार होने के बावजूद दोनों वर्गों में इस बात पर पूर्ण एकता है कि श्रीराम ऐतिहासिक पुरुष नहीं है। दो विरोधाभासी विचारों का यह संयोग अद्भुत है ।

विडंबना यह है कि पढे -लिखे, प्रबुद्ध वर्ग के हिन्दू को यह पता ही नहीं कि श्रीराम के ऐतिहासिक और काल्पनिक होने का मतलब क्या है ? वह इसे जानना भी नहीं चाहता।

स्कूल में आँख खोलने के दिन से ही श्रीराम के मिथिकल होने की बात इसके दिमाग में कंप्युटर की डिफ़ॉल्ट सेटिंग की तरह भर दी गई है।

जहां श्रीराम का नाम आया, काल्पनिक और मिथिकल शब्द अपने आप उभर आते हैं ।

दुर्भाग्य है कि कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी में पारंगत, विज्ञान तथा गणित में दक्ष और आधुनिकता के रंग में रंगा यह वर्ग बिना किसी तर्क, प्रश्न और शोध के श्रीराम के काल्पनिक होने की बात को सच मान बैठा है ।

मुझे आश्चर्य होता, यह सोचकर कि वे श्रीराम, जिनके बारे में 300 से अधिक ग्रंथ लिखे गए हों, जिस रामायण का अनुवाद विश्व की 70 भाषाओं में किया गया हो, हिंदूओं के अतिरिक्त इस देश में जिनके बारे में हर धर्म, हर भाषा, हर क्षेत्र में रामायण लिखे गए हों, जिनके बारे में ग्यारह अन्य देशों में भी रामायण लिखे गए हों, जिनका भारतीय जन-मानस पर सर्वाधिक प्रभाव हो, भारत की एकता और समृद्धि में जिनका अतुलनीय योगदान हो, जिसने संपूर्ण मानवता पर अपनी अमिट छाप छोड़ी हो, वे एक काल्पनिक व्यक्ति हैं ।

6. बिना आग के धुआँ नहीं निकलता

ये मेरे मन में उठने वाले कुछ प्रश्न थे, जिनका हमारे इतिहास में कोई स्पष्ट उत्तर नहीं है। मेरा मन बार-बार कहता कि यह सत्य नहीं है। मैं सोचता, क्या बिना आग के कहीं धुआँ निकल सकता है ?

मैं कोई इतिहासकार, इतिहास का प्राध्यापक या शोधार्थी नहीं हूँ, फिर भी मेरी इस सोच ने मुझे विवश किया कि मैं अपने स्वयं के प्रयत्नों से इसकी जड़ में जाऊँ।

इस उद्देश्य से मैंने भारतीय इतिहास के अतिरिक्त श्रीराम से संबंधित ग्रंथ, देश -विदेश के विद्वानों की पुस्तकें, शोधप्रबंध आदि पढे। अस्पष्टता का धुंध कुछ छंटा।

कुछ -कुछ समझ में आया कि इस भ्रम का बीज किसने बोया, किसने उसमें खाद पानी डाला और किसने फल खाए।

मैंने अपनी खोज के परिणामों को पुस्तक रूप देने की योजना बनाई, क्योंकि मैंने पाया कि श्रीराम के बारे में इस तरह की पुस्तकों का अभाव है। श्रीराम की ऐतिहासिकता पर व्यवस्थित शोध के नाम पर हमारे खाते में लगभग शून्य है।

इसके लिए केवल पुस्तकों पर ही निर्भर रहने की बजाय, उपलब्ध तथ्यों की प्रामाणिकता सत्यापित करने और अतिरिक्त तथ्यों को जुटाने के लिए मैंने अयोध्या से रामेश्वरम तक वनवासी राम के पदचिन्हों पर चलने का निश्चय किया।

मुझे लगा कि राम वनगमन मार्ग और मार्ग स्थित उनसे जुड़े स्थानों को स्वयं अपनी आँखों देखे बिना उनके वर्णन में विश्वसनीयता नहीं आ सकती, जो ऐसी पुस्तकों के लिए अनिवार्य तत्व है।

मेरी यात्रा का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य मुझे अपनी दूसरी जिज्ञासा का उत्तर भी ढूँढना था कि महर्षि वाल्मीकि ने रामायण क्यों लिखा ? और उन्होंने आर्यावर्त के एक से बढ़कर एक राजाओं को छोड़ राम को ही अपने ग्रन्थ का नायक क्यों चुना ?

इस उद्देश्य से मैंने कुछ मित्रो और प्रबुद्ध जनों के साथ अयोध्या से रामश्वरम तक 'श्रीराम वनगमन मार्ग : भारत एकता यात्रा-1' का आयोजन किया । इस तरह की योजनावद्ध तरीके से अयोध्या से रामेश्वरम की यात्रा करने वाले हम पहले व्यक्ति थे।

7. 'श्रीराम वनगमन मार्ग: भारत एकता यात्रा-1'

एक विशेष बस में सड़क मार्ग से चलती हुई हमारी यात्रा उन्हीं मार्गों पर चली जिन पर हज़ारों साल पहले वनवास के दौरान श्रीराम, सीता और लक्ष्मण चले थे और उन्हीं स्थानों पर रूकी, जहां उन्होंने उस दौरान प्रवास किया था । हमने यह यात्रा तीन चरणों में पूरी की ।

पहले चरण में 16.02.22 को अपने गाँव से चलकर हम वाराणसी, अयोध्या, श्रृंगवेरपुर, प्रयागराज, चित्रकूट, पंचवटी तथा किष्किन्धा तक गए और 09.03.2022 को चित्रदुर्ग, बनावर, हैलेबीडु तथा बेलुरु से बंगलुरु होते हुए हवाई जहाज द्वारा दिल्ली और फिर वहाँ से गांव आ गए। 18 मार्च को होली थी और होली तथा दशहरा, दोनों त्यौहारों को मैं निरपवाद रूप से प्रतिवर्ष, सपरिवार अपने गांव में ही मनाता रहा हूँ। 40 साल की सेवा के बीच यह क्रम कभी नहीं टूटा। इस बार भी नहीं टूटना था।

यात्रा का दूसरा चरण 24 दिसंबर' 2022 को बेंगलुरु से प्रारंभ होकर, श्रवनबेलगोला, मैसूर, ऊटी, त्रिचिरापल्ली, तंजोर, रामेश्वरम, कोडियाकराई, वेलंकनी, चिदंबरम, पुदुचेरी, महाबलीपुरम और कांचीपुरम होते हुए 09 जनवरी, 2023 को चेन्नई में समाप्त हुआ।

यात्रा के तीसरे चरण में हमने 21-30 अगस्त' 2024 के बीच दस दिनों तक श्रीलंका में सड़क मार्ग से श्रीराम से जुड़े स्थानों की यात्रा की। जिनमें कोलंबो, चिलाव, अनुराधापुरा, त्रिंकोमली, दंबूला, सिगरिया, कैंडी, नुवारा एलिया, वेलमोंडा, एल्ल और गॉल जैसे नगर प्रमुख हैं।

इस प्रकार कुल मिलाकर 48 दिनों में हमने बिहार के अपने गाँव से चलकर देश के आठ राज्यों, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और श्रीलंका के बीच सड़क मार्ग से 10000 कि० मी० से अधिक की यात्रा की।

श्रीराम से संबंधित अतिरिक्त तथ्यों की जानकारी के लिए मैंने थाईलैंड, कंबोडिया, इंडोनेशिया, सिंगापुर और बाली द्वीप की भी यात्रा की ।. इन यात्राओं की उपलब्धियां उम्मीद से अधिक रहीं ।

8. यात्रा की उपलब्धियाँ

श्रीराम की ऐतिहासिकता के बारे में मेरी धारणा और दृढ़ हुई। अकाट्य सबूत मिले। अयोध्या से रामेश्वरम तक के राम वनगमन मार्ग और मार्ग स्थित उनसे जुड़े स्थानों के बारे में प्राप्त प्रामाणिक जानकारी यात्रा की दूसरी महत्वपूर्ण उपलब्धि रही ।

इस अनूठी जानकारी को आपके साथ साझा करने में मुझे अत्यंत खुशी हो रही है।

मार्ग में मिलने वाले भारत के अद्भुत सांस्कृतिक और प्राकृतिक वैभव के दर्शन का अवसर तीसरी उपलब्धि रही, जिसका पूर्ण वर्णन इस पुस्तक में संभव नही । फिर भी मैंने आपके लिए इस पुस्तक में उस अतुलित सौंदर्य की एक झलक प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

सबसे बड़ी बात, बाली द्वीप की यात्रा के अंतिम दिन मुझे अपने दूसरी जिज्ञासा का भी उत्तर मिल गया कि महर्षि ने रामायण क्यों लिखा और उन्होंने राम को ही अपने ग्रन्थ का नायक क्यों चुना ।

अपनी यात्रा में प्राप्त प्रमाणों एवं अनुभव के आधार पर मैंने दो पुस्तकों की योजना बनाई। पहली, राम की ऐतिहासिकता पर जो अंग्रेजी में, **'Prince of Ayodhya: A Journey from Mythology to History'** शीर्षक से आ रही है।

और दूसरी **'जिन राहों पर सियाराम चले'** शीर्षक से, जिसमें राम चरित्र की उन विशेषताओं को रेखांकित किया गया है, जिनका निरूपण महर्षि वाल्मीकि ने आदिकाव्य रामायण में किया है और जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

जिन राहों पर सियाराम चले

शोध के दौरान मैने पाया कि महर्षि वाल्मीकि और तुलसीदास, दोनों ने अपने ग्रंथों की रचना जिन तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों और चुनौतियों को ध्यान में रखकर की थी, कुछ वैसी ही स्थितियां और चुनौतियां आज पुनः देश के सामने उपस्थित हो रही है । उनका परिमार्जन उसी तरह आवश्यक है, जिस तरह महर्षि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास ने किया था ।

इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि उन दोनों मनीषियों द्वारा रामायण और रामचरितमानस की रचना का मुख्य उद्देश्य केवल मनोरंजन या भक्ति का प्रचार प्रसार करना नहीं, वरन् तत्कालीन भारतीय समाज के सम्मुख उपस्थित कठिन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करना था । दोनों को यह समाधान राम में ही मिला ।

9. महर्षि वाल्मीकि

प्राचीन ग्रंथों एवं पुराणों में आर्यावर्त के सम्मुख कई गम्भीर चुनौतियों का वर्णन मिलता है । देश की सीमा पूरब में प्रयाग, पश्चिम में गांधार, उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत तक ही सीमित थी। इसके नरेश आपस में और इसकी सीमा से बाहर रहने वाले तथाकथित असुरों और राक्षसों से लड़ते रहते थे।

इस तरह के युद्धों के वर्णन से वेद, पुराण भरे पड़े हैं। बारह तो केवल देवासुर संग्राम हो गए हैं। इन अनवरत लड़ाइयों से प्रजा का जीवन और संपत्ति दोनों असुरक्षित थे। राजनय और प्रजाजन के बीच कोई संवाद, कोई तारतम्य नहीं था।

समाज कुलों, गणों, जातियों और क्षेत्रों में बंटा हुआ था। सभी पृथक दिशाओं में चल रहे थे। कोई एक ऐसी शक्ति या सत्ता नहीं थी जो इनमें सामंजस्य स्थापित कर देश में शांति और व्यवस्था स्थापित कर सके। किसी ऐसे आदर्श का भी अभाव था, जो समाज के सभी वर्गों को समान रूप से प्रेरित कर सके । स्थिति गंभीर थी। इस गंभीरता को पहचाना महर्षि वाल्मीकि ने। वे युगद्रष्टा थे।

महर्षि उन ऋषियों में नहीं थे जो केवल अपनी आध्यात्मिक उन्नति और मुक्ति के लिए तपस्या में व्यस्त रहें। लोकमंगल और लोककल्याण की उदात्त भावना से प्रेरित उस महान ऋषि के लिए अपनी मुक्ति से देश और समाज की मुक्ति ज़्यादा महत्वपूर्ण थी।

एक से एक ज्ञानी, धर्मात्मा और विद्वान ऋषियों की परंपरा में केवल महर्षि वाल्मीकि ने ही पहली बार यह महसूस किया कि देश में व्याप्त अराजकता को दूर करने के लिए व्यावहारिक जीवन में अपनाने लायक़ कुछ उच्च आदर्शों एवं नैतिक मूल्यों के स्थापना की आवश्यकता है, जो समाज के सभी वर्गों के लिए आदर्श हों ।

इसके लिए उस महान ऋषि ने वेद, पुराण, उपनिषद् जैसे गंभीर ग्रंथ लिखने और आत्मा की अनश्वरता और भौतिक जगत की नश्वरता पर ज्ञान देने की जगह लोगों को इसी जन्म और इसी लोक में जीवन सुखमय बनाने का मंत्र दिया।

उन्होंने समाज को रामायण और राम दिया। राम के रूप में एक ऐसा चरित्र, जिनके द्वारा स्थापित जीवन मूल्य और उच्च नैतिक आदर्श मानवीय क्रियाकलाप के हर क्षेत्र में, समाज के हर वर्ग- राजा से प्रजा तक, के लिए मार्ग दर्शक बन गए। आज भी बने हुए हैं।

इसीलिए हज़ारों वर्षों बाद आज भी पुत्र, पति, शिष्य, भाई, राजा, सखा, यहाँ तक की शत्रु के रूप में भी राम ही सबके आदर्श हैं । इन सभी रूपों में राम से श्रेष्ठ किसी अन्य पुरुष की कल्पना भी नहीं की जा सकती। राम का राज्य आदर्श राज्य का और राम के अमोघ बाण रामबाण के रूपमें अचूक उपाय के पर्यायवाची हो गए ।

और नाम की महिमा तो ऐसी हुई कि 'रामनाम' ही प्राणिमात्र की मुक्ति का मंत्र बन गया। महर्षि का रामायण लिखने का उद्देश्य पूरा हुआ।

कालांतर में वाल्मीकि रामायण भारतीय समाज का एक ऐसा संविधान बन गया जिसमें आजतक किसी संशोधन की आवश्यकता नहीं पड़ी। इतिहासकारों के अनुसार महर्षि ने रामायण की रचना ईसा पूर्व सातवीं से पाँचवीं शताब्दी के बीच की थी । लगभग 2500-2700 वर्षों पूर्व ।

10.गोस्वामी तुलसीदास

देश की सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों में गुणात्मक परिवर्तन आया 12 वीं शताब्दी में, जब भारत में इस्लाम का आगमन हुआ। अभीतक बाहर से आने वाले ग्रीक, शक, कुषाण और हूण आदि जातियाँ इस देश की सामाजिक व्यवस्था में अपनी स्थिति के अनुसार रच बस गयीं । लेकिन इसके विपरीत इस्लाम अपना अलग अस्तित्व बनाये रखने के लिए कृत निश्चय था।

राजनीतिक सत्ता हथियाने के बाद इस्लाम एकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा का विरोध और जातिविहीन समाज की परिकल्पना लेकर आया। इनसे समाज में नये तनावों का जन्म हुआ, जिनसे निपटना एक चुनौती थी। इस समय आवश्यकता थी, एक ऐसे प्रयास की, जो इस तनाव के नकारात्मक प्रभावों से समाज की रक्षा कर सके।

ऐसे में आगे आये गोस्वामी तुलसीदास, अपना रामचरितमानस लेकर। उस संत महाकवि को भी तत्कालीन चुनौतियों का समाधान राम के ही चरित्र में दिखा । संस्कृत में लिखा वाल्मीकि रामायण आम जनता से दूर हो चुका था। कुछ ही लोग उसे पढ़ और समझ सकते थे। राम को जन-जन तक पहुँचाने के लिए तुलसीदास ने रामचरितमानस को हिंदी की एक बोली ठेठ अवधी में लिखा।

सहज ही गेय चौपाई छंद में लिखे जाने के कारण रामचरितमानस शीघ्र ही जनता में राम से संबंधित सबसे लोकप्रिय काव्य बन गया। रामद्वारा स्थापित उच्च नैतिक मूल्यों और भक्तिकाल की समन्वयकारी प्रवृत्तियों से चालित यह ग्रंथ समाज के लिए सबसे विश्वसनीय संदर्भ विंदु बन गया। तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना सन 1574-76 ई० में की थी । लगभग 450 वर्षों पूर्व।

11. आधुनिक काल

तब से लेकर आज के भारत की राजनीतिक, सामाजिक स्थितियों में क्रांतिकारी बदलाव आ चुका है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत आज एक स्वतंत्र देश है। सदियों से चली आ रही राजतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं का अंत हो चुका है । देश में प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था है, जिसमें हर नागरिक को समान अधिकार प्राप्त हैं ।

समानता आधारित नयी शासन व्यवस्था ने नयी आकांक्षाओं को जन्म दिया है, जिन्हें पूरी करने के लिए साधनों पर अधिकार पाने की होड़ बढ़ गई है। इससे उपजे तनाव का राजनीतिक लाभ उठाने के लिए समाज को जाति और धर्म के आधारपर बाँटने की कोशिश ने देश की एकता, आर्थिक प्रगति और सामाजिक समरसता के लिए गंभीर संकट पैदा कर दिया है । देश में समता मूलक, उन्नत और कल्याणकारी समाज की स्थापना के लक्ष्य को इससे गहरी ठेस पहुँच सकती है।

इस लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में आनेवाली बाधाओं को दूर करना आज भारतीय समाज की सबसे बड़ी चुनौती है। इस चुनौती से निबटने के हमारे सामने जितने विकल्प हैं, उनमें आज भी राम ही श्रेष्ठ हैं।

सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में उनके द्वारा स्थापित उच्च आदर्शों और नैतिक मूल्यों के पालन में ही, न केवल भारत वरन् सम्पूर्ण मानव मात्र का कल्याण निहित है। आवश्यकता है, उन मूल्यों को नए रूप में, आज की परिस्थितियों के संदर्भ में, पारिभाषित करने की।

महर्षि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास के पद चिन्हों पर चलते हुए यह पुस्तक उसी दिशा में एक अत्यंत विनम्र प्रयास है। और लेखक के रूप में मेरे सामाजिक दायित्व का निर्वाह भी ।

यूँ तो राम का पूरा चरित्र ही अनुकरणीय है, फिर भी इस पुस्तक में उनके चरित्र के उन विशेषताओं को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है, जो आज की परिस्थितियों में ज़्यादा प्रासंगिक हैं। इस संदर्भ में 'राम की प्रासंगिकता: कल आज और कल' और 'रामराज्य: कल्पना या वास्तविकता' शीर्षक लेख द्रष्टव्य हैं।

इस संदर्भ में यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि राम का मार्ग शांति का मार्ग है। उन्होंने समता, सामाजिक समरसता, शांति, सद्भाव और मैत्री के मार्ग पर चलकर ही भारत में क्रांतिकारी परिवर्तन किए और रामराज्य की स्थापना की । शांति का विकल्प अशांति और हिंसा है, जो किसी भी स्थिति में उचित और अभीष्ट नहीं है।

12. शोध का परिणाम: अनूठी रामकथा

पाँच वर्षों से भी अधिक शोध और श्रम का परिणाम इस पुस्तक में राम वनवास की अवधि की अर्थात् अयोध्या से लंका जाने तथा लंका से अयोध्या लौटकर देश में रामराज्य के स्थापना तक की पूरी रामकथा शामिल है।

यह पुस्तक राम द्वारा वन और जीवन मार्ग पर चलते हुए उच्च नैतिक मूल्यों और आदर्शों की स्थापना का इतिहास है। श्रीराम के संघर्षों और उपलब्धियों की कहानी समेटे हुए यह पुस्तक उनके मर्यादा पुरुषोत्तम बनने की कथा भी है । यह उस राम की भी कहानी है, जो एक मनुष्य हैं, और मानवीय भावनाओं से प्रभावित होते हैं।

वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस और कंबन रामायण के अतिरिक्त देश -विदेश की रामकथाओं, ग्रंथों, पुराणों एवं शोध प्रबंधों पर आधारित इस पुस्तक में रोचक कथाओं एवं प्रासंगिक टिप्पणियों द्वारा रामकथा के जटिल प्रसंगों को सहज बनाने की कोशिश की गयी है। पुस्तक की भाषा और टिप्पणियों का स्तर सभी तरह के पाठकों के अनुकूल और शैली मनोरंजक रखी गई है।

रामकथा के प्रचार प्रसार में विभिन्न तरह के ललित छंदों और रसों की बड़ी भूमिका रही है । महर्षि वाल्मीकि के श्लोक, गोस्वामी तुलसीदास के दोहे, सोरठा और चौपाइयाँ, कवितावली के सवैया और कवित्त, राधेश्याम रामायण के पारसी शैली के छन्दों से लेकर महाकवि निराला के आधुनिक हिंदी के छन्द इसमें प्रमुख हैं । पाठकों के आनंद के लिए इन सबकी बानगी इस पुस्तक में देखने को मिलेगी। सभी रसों के साथ ।

समयाभाव या अन्य कारणों से जो लोग वाल्मीकि रामायण, कंबन रामायण, अन्य ग्रंथों, पुस्तकों एवं शोध पत्रों का पाठ नहीं कर पाते, उनके लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी साबित होगी।

13.राम वनगमन मार्ग और मार्ग स्थित श्रीराम से जुड़े स्थानों के बारे में प्रामाणिक जानकारी

पिछले कई दशकों से श्रीराम को जानने में लोगों की रुचि बढ़ी है। लोग उनसे जुड़े स्थानों को देखना भी चाहते हैं। अधिकांश लोग अयोध्या तक जाते हैं। थोड़े बहुत चित्रकूट जाते हैं। पर चित्रकूट के आगे जानेवालों की संख्या नगण्य है, क्योंकि उसके आगे के मार्ग की स्पष्ट और प्रामाणिक जानकारी आसानी से कहीं उपलब्ध नहीं है।

उसी तरह रामकथा से जुड़े मुख्य स्थानों अयोध्या, चित्रकूट आदि में श्रीराम से जुड़े दर्शनीय स्थानों का भी कोई स्पष्ट और प्रामाणिक विवरण कहीं उपलब्ध नहीं है । इंटरनेट पर कुछ जानकारी उपलब्ध है, पर वह भी आधी-अधूरी और अप्रामाणिक।

यात्रा के दौरान मैंने यह भी पाया कि यहाँ के स्थानीय गाइड्स को भी श्रीराम से जुड़े दर्शनीय स्थानों की पूरी जानकारी नहीं है। वे कुछ ही लोकप्रिय स्थानों को दिखाकर अपने कर्तव्य की इति श्री कर लेते हैं। हमने अब वह कमी पूरी कर दी है।

वर्षों के शोध और भौतिक सत्यापन के बाद हमने अयोध्या से रामेश्वरम तक का सड़क मार्ग का मानचित्र और अयोध्या, श्रृंगवेरपुर, प्रयागराज, चित्रकूट, पंचवटी, किष्किंधा और रामेश्वरम के अतिरिक्त मार्ग में पड़ने वाले श्रीराम से जुड़े सभी दर्शनीय स्थानों का विवरण इस पुस्तक में उपलब्ध करा दिया है।

इनमें वे भी स्थान शामिल हैं, जिनका उल्लेख किसी प्रमुख ग्रंथ या पुस्तक में नहीं हैं, पर जो स्थानीय स्मृतियों में सदियों से जीवित हैं, और राम वनगमन मार्ग के स्वरूप को पूर्णता प्रदान करते हैं । ऐसे अधिक स्थान महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में हैं, और बहुत ही अच्छी अवस्था में हैं।

इनके दर्शन बिना राम वनवास के संघर्षों, देश की एकता में उनके योगदान और उनकी अन्य उपलब्धियों को समझना संभव नहीं है । इनके शामिल किए जाने की कसौटी और प्रक्रिया का पूरा विवरण 'मार्ग निर्धारण' शीर्षक लेख में विस्तार से उपलब्ध है

अयोध्या से रामेश्वरम तक के लंबे मार्ग में पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण विश्वस्तर के अनेक स्थान स्थित हैं। इनके परिचय के अतिरिक्त संबंधित राज्यों के नित बदलते सामाजिक, आर्थिक परिदृश्य का संक्षिप्त विवरण भी इस पुस्तक का भाग है।

यात्रियों की सुविधा के लिए मार्ग स्थित स्थानों की भौगोलिक स्थिति, दो स्थानों के बीच की दूरी और इसमें लगने वाले अनुमानित समय का विवरण भी हमने इस पुस्तक में उपलब्ध करा दिया है । इन सभी सूचनाओं को इस पुस्तक में उपलब्ध कराना 'श्रीराम वनगमन मार्ग: भारत एकता यात्रा-1' की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

14. सुविधाजनक कार्यक्रम

अयोध्या से रामेश्वरम तक की यात्रा में लगभग 35-38 दिन लगते हैं । आजकल के व्यस्त जीवन में सबके लिए एक ही साथ इतना समय निकालना संभव नहीं है। इसलिए यात्रियों की सुविधा के लिए हमने पूरी यात्रा को पाँच खंडों में विभाजित कर दिया है। प्रत्येक खंड 7/8 दिन का, जिसमें 3/4 स्थान श्रीराम से जुड़े और इतने ही विश्वस्तर के पर्यटन स्थल । लंका स्थित स्थानों और घटनाओं का विवरण पुस्तक के छठे- लंकाखंड में उपलब्ध है, जिसमें 8-10 दिन लगेंगे।

मेरे जीवनभर के अध्ययनजनित ज्ञान, प्रामाणिक ग्रथों, राम वनगमन मार्ग पर यात्रा के अनुभव और उनसे जुड़ी तथ्यात्मक सूचनाओं और स्थानों की ज़मीन पर स्वयं द्वारा भौतिक सत्यापन के आधार पर ही इस पुस्तक की रचना की गई है। इसलिए इसमें शामिल सूचनाओं की प्रामाणिकता असंदिग्ध है। यह अनूठी विशेषता इस पुस्तक को रामकथा पर लिखी अन्य पुस्तकों से अलग करती है।

यह मेरी पहली पुस्तक है और हिंदी भी मैंने दशकों बाद लिखा है। कमियाँ और त्रुटियां स्वाभाविक हैं। उम्मीद है, इनपर ध्यान न देकर आप केवल कौशल्यानंदन के चरित्र की विशेषताओं पर ही दृष्टि रखेंगे ।

स्वयं और परिवार के सदस्यों के सहयोग से आयोजित हमारी यात्रा पूर्णतः गैर राजनीतिक थी, जिसमें किसी भी राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक संगठन या व्यक्ति से किसी तरह का सहयोग नहीं लिया गया था।

15. स्वान्तःसुखाय

श्रीराम से जुड़े मेरे सारे प्रयोजन, 'श्रीराम वनगमन मार्ग: भारत एकता यात्रा' और यह पुस्तक, सभी गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस की तरह 'स्वान्तःसुखाय' हैं। अगर यह पुस्तक आपको उपयोगी लगे तो मेरा यह लघु प्रयास भी उन्हीं की तरह 'सर्वांत: सुखाय:' हो जाएगा।

****

राम की पैड़ी, अयोध्या

राम शयन मंदिर, श्रृंगवेरपुर